"देशी बांस - उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 11 से 15 सितम्बर 2017 तक "देशी बांस - उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता" विषय पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों के 19 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. वी.पी. तिवारी ने

कहा कि कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं के कौशल विकास करने हेतु भारत सरकार की एक महत्वकांक्षी योजना है । उन्होंने कौशल विकास के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो कौशल विकास ही एकमात्र माध्यम है। जिस तरह शिक्षा को महत्व दिया गया है, उसी तरह कौशल विकास को भारत सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे भविष्य में बेरोजगार युवाओं को रोजगार के और अधिक अवसर प्राप्त होंगें । उन्होंने बताया की संस्थान का सदैव प्रयास रहता है कि स्थानीय जनता विशेषकर किसानों तथा विद्यार्थिओं को वानिकी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया जाए, परन्तु संस्थान की ओर से प्रदेश के युवाओं के कौशल विकास के क्षेत्र में यह प्रथम प्रयास किया जा रहा है । संस्थान को यदि इस प्रशिक्षण के कुछ उचित परिणाम मिलते हैं तो संस्थान भविष्य में इस प्रकार के आयोजन करता रहेगा । अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ग्रामीण परिस्थितियों, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में बांस का अपना एक अलग ही महत्त्व है । अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कहा कि अन्य फसलों पर सूखे एवं कीट बीमारियो का प्रकोप हो सकता है, जिसके कारण किसान को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है, लेकिन बाँस एक ऐसी फसल है जिस पर सूखे एवं वर्षा का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अपने संबोधन के उपरांत डॉ. तिवारी ने मुख्य अतिथि महोदय से आग्रह किया कि इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ करें और इस अवसर प्रशिक्षणार्थियों तथा संस्थान का मार्गदर्शन करने हेतु आग्रह किया ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री अमर चंद शर्मा, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वित्त), हिमाचल प्रदेश द्वारा संस्थान के पंथाघाटी, शिमला स्थित परिसर में किया गया। इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य-अतिथि महोदय ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा युवाओं को इस महत्वपूर्ण विषय पर व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सराहना की तथा कहा कि इस प्रकार के कौशल विकास प्रशिक्षण से बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को न केवल रोजगारी के अवसर प्राप्त होंगें अपितु इसे लघु उद्योग के रूप में अपना कर दूसरे बेरोजगार युवाओं को भी रोजगार दिलाने में मदद मिलेगी । उन्होंने कहा कि यह संस्थान वानिकी अनुसन्धान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है तथा वानिकी एवं पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर समय-समय पर हितधारकों को प्रशिक्षण भी प्रदान करता रहता है । बांस के उपयोग तथा महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए मुख्य-अतिथि ने कहा कि सदियों से ही हिमाचल प्रदेश में बांस का उपयोग होता रहा है । बांस से टोकरियाँ, किल्टे इत्यादि बनाये जाते है जिन्हें हिमाचल प्रदेश में गोबर की खाद तथा अन्य कृषि उत्पादों की ढुलाई में प्रयोग किया जाता है तथा बाड़ इत्यादि लगाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में कुर्सी, मेज, लैंप और कई

अन्य फर्नीचर के सामान बनाने के लिए बांस और बेंत का इस्तेमाल किया जाता है। बांस की बनी कई चीजें कला के संग्रह में शामिल होती है । बांस की बुनाई को एक प्रमुख कला के रूप में जाना जाता है, जिससे इस व्यवसाय को अपनाने वालों की आर्थिकी में भी सुधार होता है । उन्होंने कहा कि आज से कुछ वर्षों पहले बांस से बने सामान का बहुत अधिक प्रचलन था परन्तु वर्तमान में इसका स्थान प्लास्टिक लेता जा रहा है जो कि एक चिंता का विषय है क्योकि प्लास्टिक के अधिक प्रयोग से पर्यावरण पर विपरीत असर पड़ रहा है । बाँस की प्राकृतिक सुदंरता के कारण पुनः इसकी माँग सौन्दर्य एवं डिजाइन की दुनिया में तेजी से बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त ऐसी कई नवीनतम् प्रोद्योगिकियों का विकास हुआ है जिससे लकड़ी के उपयोग को बाँस के द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके। भविष्य में बांस तथा इससे निर्मित होने वाले उत्पादों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बाँस के उचित प्रसंस्करण हेतु कुशल, मजबूत एवं उचित मूल्य के उपकरणों की आवश्यकता है, जिससे उत्पादकता में बढ़त, कठिन श्रम में कमी एवं बाँसों की बर्बादी में कमी की जा सके। विकास कार्यो ने, विभिन्न क्षेत्रों जैसे बागबानी, पशुधन, मत्स्य पालन में, बाँस के उपयोग की संभावनाएँ बढ़ाई है। इसका उपयोग वास्तुकला, भंडारण संरचनाओं, आवास, मत्स्य पालन संरचनाएं, मछली जाल, मछली बीजों का परिवहन इत्यादि में किया जा सकता है। बाँस की बनी वस्तुओं का ग्रामीण स्तर पर उत्पादन रोज़गार एवं अच्छे आय का माध्यम बन सकती है। बाँस का उपयोग करके कृषि कार्यों में उपयोग आने वाले उपकरणों का निर्माण भी किया जा सकता है। इस प्रकार कृषि उपकरणों में बाँस एक हरित अभियांत्रिकीय पदार्थ के रूप में अपनाया जा सकता है। उन्होंने अपने अभिभाषण में बांस की महत्ता एवं जीवन में इसकी उपयोगिता की जानकारी देते हुए प्रशिक्षणार्थियों को बांस की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अपने स्तर पर योगदान देने तथा इससे सम्बन्धित शिल्पकारिता को अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा आशा व्यक्त की कि इस कार्यक्रम से प्राप्त प्रशिक्षण एवं जानकारी से लाभान्वित होकर किसान अपनी आर्थिकी सुदृढ़ कर सकेंगे ।

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय बांस संसाधन और प्रौद्योगिकी केन्द्र (Centre for Indian Bamboo Resource and Technology) के प्रशिक्षकों तथा कुल्लू जिले के बांस के शिल्पकार, श्री राम सिंह एवं श्री बौवी ने प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया, जिमसें मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश कृषि में उपयोग होने वाले उत्पाद जैसे, किल्टा, टोकरी तथा अनाज को साफ़ करने हेतु छज एवं शूप तथा सजावटी उत्पाद बनाने/ तैयार करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया ।

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में **डॉ. जी. एस. गोराया**, प्रधान मुख्य अरण्यपाल, हिमाचल प्रदेश बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. गोराया ने बांस की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों, विशेषकर हिमाचल प्रदेश में बांस का अपना ही महत्व है । उन्होंने कहा कि एक शोध के अनुसार हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक घर में बांस की बनी औसतन पांच वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, लेकिन आधुनिकता के इस दौर में बांस से बनी वस्तुओं का स्थान प्लास्टिक से बने उत्पाद ले रहे है, जो की एक चिंता का विषय है, क्योंकि प्लास्टिक से बने उत्पाद पर्यावरण को नुक्सान भी पहुंचाते है । बांस से बने पारंपरिक उत्पादों को प्रयोग करने से इस व्यवसाय से जुड़े लोगों को व्यवसाय मिलता है तथा उनकी जीविका में बढ़ोतरी होती है इसलिए इस व्यवसाय को कृषि के साथ-साथ एक अतिरिक्त व्यवसायिक गतिविधि के रूप में भी अपनाया जा सकता है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों के साथ सीधा संवाद कर प्रशिक्षण के महत्त्व तथा उपयोगिता के

के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा उनसे आग्रह किया कि वे हिमाचल प्रदेश के इस सदियों पुराने व्यवसाय से जुड़े रहें । प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सुझाव दिया गया कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि लगभग दो महीने या इससे अधिक होने चाहिये क्योंकि पांच दिन का व्यवहारिक प्रशिक्षण बहुत ही कम अवधि का है । प्रशिक्षणार्थियों के इस प्रशन का जबाव देते हुए उन्होंने कहा कि कौशल विकास योजना के अंतर्गत अभी तो संस्थान की ओर से यह प्रथम प्रयास है पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा रूचि दर्शाने पर इस तरह के कर्यक्रमो को यह संस्थान भारत सरकार के पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवतर्न मत्रालय के साथ मिलकर इस प्रशिक्षण की अवधि तथा कार्यक्षेत्र को बढ़ा सकता है । अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि पर्यावरण-मित्र के रूप में बांस जहाँ भूमि की जैविक उर्वरा शक्ति को अक्षुण्ण रखकर प्राकृतिक सफाई का कार्य करता है, वहीं लघु, कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग के क्षेत्र में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास हेतु एक वैकल्पिक आधार भी प्रदान करता है, इसलिए अधिक से अधिक ग्रामीण युवाओं को इस पौराणिक कला को सीख कर अपनी आर्थिकी में बढ़ोतरी करने के प्रयास करने चाहिए । इसके अतिरिक्त इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. वी. पी. तिवारी, समूह समन्वयक शोध डॉ. के. एस. कपूर, वैज्ञानिक व विस्तार अधिकारी, विभिन्न विशेषज्ञ एवं अन्य कर्मचारी भी उपस्थित रहे ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक श्री सत्य प्रकाश नेगी, अरण्यपाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में इस

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि संस्थान का कौशल विकास क्षेत्र में प्रशिक्षण का यह पहला प्रयोग है। इस प्रशिक्षण में केवल व्यवहारिक प्रशिक्षण पर बल दिया जा रहा है, जिससे इस क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों के हुनर में वृद्धि की जा सके तथा ग्रामीण एवं बेरोजगार नवयुवकों के कौशल विकास में सुधार करने की पहल संस्थान द्वारा की गई । उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण हेतु नामांकन हिमाचल प्रदेश के वन-मंडल अधिकारियों, खण्ड विकास अधिकारियों, प्रबंध निदेशक, हिमाचल प्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम तथा कौशल विकास निगम के माध्यम से आमंत्रित किए गए थे । उन्होंने उपरोक्त सभी विभागों के अधिकारियों का नामांकन तथा सहयोग के लिए धन्यवाद किया तथा आशा प्रकट की कि भविष्य में भी हमें उनका सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही उन्होंने सूचित किया कि इस प्रशिक्षण के आयोजन हेतु भारतीय बांस संसाधन और प्रौद्योगिकी केन्द्र (Centre for Indian Bamboo Resource and Technology) के दक्ष प्रशिक्षकों को बुलाया गया है तथा इसके साथ ही जिला कुल्लू के प्रख्यात शिल्पकार श्री राम सिंह तथा श्री बौवी भी प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण के उपयोगिता के बारे में प्रतिक्रिया/ सुझाव भी लिए गए, जिससे संस्थान को भविष्य में इस प्रकार के आयोजनों में सुधार करने में कारगार साबित होंगे । प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में श्री नेगी ने मुख्य अथिति तथा प्रशिक्षणार्थियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए आशा व्यक्त की कि प्रशिक्षणार्थियों इस प्रशिक्षण से अवश्य ही लाभान्वित हुए होंगे तथा प्रशिक्षण उनके आर्थिक सुधर में लाभकारी साबित होगा । अंत में श्री नेगी ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु लगी संस्थान की टीम, विशेषकर डॉ. वनीत जिषटू, वैज्ञानिक का भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम
आयोजक

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
"देशी बांस–उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता"
आयोजक
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
देशी ब्रांस
आयोजक
शिमला (हि.प्र.)

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
"देशी बांस-उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारियाँ"
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
"देशी बांस-उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकलाएं"

कौशल विकास प्रशिक्षण
देशी बांस – उ
मूल्य संवर्धन एव
रिता"
2017, शिमला, हिमाचल प्रदेश
आयोजक
अनुसंधान संस्थ

Himalaya

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
"देशी बांस – उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता"
11 से 15 सितम्बर, 2017, शिमला, हिमाचल प्रदेश
आयोजक
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

कौशल
प्रशिक्षण कार्यक्रम
मूल्य
एवं शिल्पकारिता
आयोजक
अनुसंधान
शिमला

कौशल विकास प्रशिक्षण
मूल्य संवर्धन एवं शिल्प
आयोजक
अनुसंधान

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
"देशी बांस-उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता"
आयोजक
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू, 15 को होगा समापन

बांस का सामान बनाने की ट्रेनिंग

■ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा देशी बांस-उपयोग, मूल्य संवर्द्धन एवं शिल्पकारिता विषय पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम का समापन 15 सितंबर को होगा। इसमें विभिन्न जिलों के लगभग 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ अमर चंद शर्मा, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वित्त) द्वारा पंथाघाटी शिमला स्थित परिसर में किया गया। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा युवाओं को इस महत्त्वपूर्ण विषय पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सराहना की। बांस से टोकरियां, किल्टे इत्यादि बनाए जाते हैं। इतना ही नहीं, बाड़ इत्यादि लगाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में इसका स्थान प्लास्टिक लेता जा रहा है, जो कि एक चिंता का विषय है क्योंकि प्लास्टिक के अधिक प्रयोग से पर्यावरण पर विपरीत असर पड़ रहा है। इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के अंतर्गत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो कौशल विकास ही एकमात्र माध्यम है। कौशल विकास को सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि बेरोजगार युवाओं को रोजगार के और अधिक अवसर प्राप्त हो सकें।

दिव्य हिमाचल Tue, 12 September 2017
epaper.divyahimachal.com/c/22054047

शिमला-आसपास amarujala.com

बांस का महत्व बताने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम किया शुरू

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान कर रहा कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने सोमवार से देसी बांस के उपयोग मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता विषय पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों के लगभग 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधान मुख्य अरण्यपाल वित्त अमर चंद शर्मा ने संस्थान के पंथाघाटी स्थित परिसर में किया। मुख्य अतिथि ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा युवाओं को इस महत्वपूर्ण विषय पर व्यवहारिक प्रशिक्षण देने के लिए सराहना की। कहा कि ऐसे कौशल विकास प्रशिक्षण से ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे। यह संस्थान वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। प्रदेश में कुर्सी, मेज, लैंप और कई अन्य फर्नीचर के सामान बनाने के लिए बांस और बेंत का इस्तेमाल किया जाता है। संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत किया जा रहा है। उद्घाटन समारोह के अंत में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. विनीत जिस्टू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

देशी बांस उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

जिला ब्यूरो प्रमुख

शिमला, 11 सितंबर। हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा 11 से 15 सितम्बर तक देशी बांस उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता विषय पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों के लगभग 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहें है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधान मुख्य अरण्यपाल वित्त अमर चंद शर्मा द्वारा संस्थान के पंथाघाटी, शिमला स्थित परिसर में किया गया। इस अवसर पर अपने भाषण में मुख्य अतिथि ने कहा कि इस प्रकार के कौशल विकास प्रशिक्षण से ग्रामीण युवाओं को न केवल रोजगार के अवसर प्राप्त होंगें अपितु इस से लघु उद्योग के रूप में अपना कर दूसरे बेरोजगार युवाओं को भी रोजगार दिलाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि सदियों से ही हिमाचल प्रदेश में बांस का उपयोग होता रहा है। बांस से टोकरियाँ, किल्टे इत्यादि बनाये जाते है जिन्हें हिमाचल प्रदेश में गोबर की खाद तथा अन्य कृषि उत्पादों की ढुलाई में प्रयोग किया जाता है तथा बाड़ इत्यादि लगाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में कुर्सी, मेज, लैंप और कई अन्य फर्नीचर के सामान बनाने के लिए बांस और बेंत का इस्तेमाल किया जाता है। बांस की बनी कई चीजें कला के संग्रह में शामिल होती है। बांस की बुनाई को एक प्रमुख कला के रूप में जाना जाता है, जिससे इस व्यवसाय को अपनाने वाले को आर्थिकी में भी सुधार होता है। कुछ वर्षों पहले बांस से बने सामान का बहुत अधिक प्रचलन था परन्तु वर्तमान में इसका स्थान प्लास्टिक लेता जा रहा है जो कि एक चिंता का विषय है क्योकि प्लास्टिक के अधिक प्रयोग से पर्यावरण पर विपरीत असर पड़ रहा है।

'देशी बांस, उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शिमला/एक्शन इंडिया ब्यूरो

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 11 से 15 सितम्बर 2017 तक देशी बांस, उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता विषय पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों के लगभग 25 प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहें है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ अमर चंद शर्मा, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वित्त), हिमाचल प्रदेश द्वारा संस्थान के पंथाघाटी, शिमला स्थित परिसर में किया गया। इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में मुख्यातिथि महोदय ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा युवाओं को इस महत्वपूर्ण विषय पर व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सराहना की तथा कहा कि इस प्रकार के कौशल विकास प्रशिक्षण से ग्रामीण युवाओं को न केवल रोजगारी के अवसर प्राप्त होंगें अपितु इसे लघु उद्योग के रूप में अपना कर दूसरे बेरोजगार युवाओं को भी रोजगार दिलाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि यह संस्थान वानिकी अनुसन्धान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है तथा वानिकी एवं पर्यावरण सरंक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर समय-समय पर हितधारकों को प्रशिक्षण भी प्रदान करता रहता है। उन्होंने कहा कि सदियों से ही हिमाचल प्रदेश में बांस का उपयोग होता रहा है। बांस से टोकरियाँ, किल्टे इत्यादि बनाये जाते है जिन्हें हिमाचल प्रदेश में गोबर की खाद तथा अन्य कृषि उत्पादों की ढुलाई में प्रयोग किया जाता है तथा बाड़ इत्यादि लगाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में कुर्सी, मेज, लैंप और कई अन्य फर्नीचर के सामान बनाने के लिए बांस और बेंत का इस्तेमाल किया जाता है। बांस की बनी कई चीजें कला के संग्रह में शामिल होती है। बांस की बुनाई को एक प्रमुख कला के रूप में जाना जाता

बांस से टोकरियाँ किल्टे इत्यादि बनाये जाते है जिन्हें हिमाचल प्रदेश में गोबर की खाद तथा अन्य कृषि उत्पादों की ढुलाई में प्रयोग किया जाता है

है, जिससे इस व्यवसाय को अपनाने वाले की आर्थिकी में भी सुधार होता है। आज से कुछ वर्षों पहले बांस से बने सामान का बहुत अधिक प्रचलन था परन्तु वर्तमान में इसका स्थान प्लास्टिक लेता जा रहा है जो कि एक चिंता का विषय है क्योकि प्लास्टिक के अधिक प्रयोग से पर्यावरण पर विपरीत असर पड़ रहा है। बांस की प्राकृतिक सुंदरता के कारण पुनः इसकी माँग सौन्दर्य एवं डिजाइन की दुनिया में तेजी से बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त ऐसी कई नवीनतम प्रोद्यौगिकियों का विकास हुआ है जिससे लकड़ी के उपयोग को बांस के द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके। भविष्य में बांस तथा इससे निर्मित होने वाले उत्पादों

पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि बांस के उचित प्रसंस्करण हेतु कुशल, मजबूत एवं उचित मूल्य के उपकरणों की आवश्यकता है, जिससे उत्पादकता में बढ़त, कठिन श्रम में कमी एवं बांसों की बर्बादी में कमी की जा सके। विकास कार्यों ने, विभिन्न क्षेत्रों जैसे बागबानी, पशुधन, मत्स्य पालन में बांस के उपयोग की संभावनाएँ बढ़ाई है। इसका उपयोग फसल वास्तुकला, भंडारण संरचनाओं, आवास, मत्स्य पालन संरचनाएं, मछली जाल, मछली चीजों का परिवहन इत्यादि में किया जा सकता है। बांस की बनी वस्तुओं का ग्रामीण स्तर पर उत्पादन रोजगार एवं अच्छे आय का माध्यम बन सकती है। बांस का उपयोग करके कृषि कार्यों में उपयोग आने वाले उपकरणों का निर्माण भी किया जा सकता है। इस प्रकार कृषि उपकरणों में बांस एक हरित अभियांत्रिकीय पदार्थ के रूप में अपनाया जा सकता है।

उन्होंने अपने अभिभाषण में बांस की महत्ता एवं जीवन में इसकी उपयोगिता की जानकारी देते हुए प्रशिक्षणार्थियों को बांस की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अपने स्तर पर योगदान देने तथा इससे सम्बन्धित शिल्पकारिता को अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा आशा व्यक्त की कि इस कार्यक्रम से प्राप्त प्रशिक्षण एवं जानकारी से लाभान्वित होकर किसान अपनी आर्थिकी सुदृढ़ कर सकेंगे ।

इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में संस्थान के निदेशकए डॉ. वी.पी. तिवारी ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के अंतर्गत किया जा रहा है जोकि युवाओं के कौशल विकास करने हेतु भारत सरकार की एक महत्वकांक्षी योजना है। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो कौशल विकास ही एकमात्र माध्यम है। जिस तरह शिक्षा को महत्व दिया गया है, उसी तरह कौशल विकास को वर्तमान सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे भविष्य में बेरोजगार युवाओं को रोजगार के और अधिक अवसर प्राप्त होंगें। उन्होंने बताया की संस्थान का सदैव प्रयास रहता है स्थानीय जनता विशेषकर किसानों तथा विद्यार्थियों को वानिकी एवं पर्यावरण सरंक्षण के प्रति जागरूक किया जाए। संस्थान की ओर से प्रदेश के युवाओं के कौशल विकास के क्षेत्र में यह प्रथम प्रयास किया जा रहा है तथा संस्थान को यदि इस प्रशिक्षण के कुछ उचित परिणाम मिलते हैं तो संस्थान भविष्य में इस प्रकार के आयोजन करता रहेगा।

एक्शन इंडिया Tue, 12 September 2017 actionindia.epapr.in//c/22046569

ब्रीफ न्यूज़

प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ

शिमला, 11 सितम्बर (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एच.एफ.आर.आई.) में बांस के उपयोग, मूल्य संवर्धन एवं शिल्पकारिता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हो गया है। यह कौशल विकास कार्यक्रम 5 दिन तक चलेगा। इसमें कई जिलों के प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं। इसका शुभारंभ प्रधान मुख्य अरण्यपाल वित्त अमर चंद शर्मा ने किया। उन्होंने कहा कि वन अनुसंधान संस्थान युवाओं को इस महत्वपूर्ण विषय पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है। इस प्रकार के कौशल विकास प्रशिक्षण से ग्रामीण युवाओं को न केवल रोजगारी के अवसर प्राप्त होंगे बल्कि इसे लघु उद्योग के रूप में अपना कर दूसरे बेरोजगार युवाओं को भी रोजगार दिलाने में मदद मिलेगी। शर्मा ने कहा कि सदियों से ही हिमाचल प्रदेश में बांस का उपयोग होता रहा है।

पंजाब केसरी ई-पेपर Tue, 12 September 2017 epaper.punjabkesari.in//c/2205421